P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-6, ISSUE-4, May- Supplementary Issue - 2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पाठ्यचर्या आधृत हिन्दी व्याकरणिक स्थिति का पूर्व परीक्षण और तदनुसार सम्बलन शिक्षण

सारांश

विद्यार्थियों के समक्ष व्याकरणिक समस्याएँ सदैव चुनौती देती हुई प्रतीत होती है। विद्यार्थियों की सजगता, पाठ्य सामग्रियों की सहज उपलब्धता और अध्यापकों की कर्तव्य-निर्वहन के प्रति प्रतिबद्धता हिन्दी व्याकरणिक समस्याओं का पर्याप्त समाधान है। हाँ, इस पर कहीं से कोई सम्बल मिल जाता है तो यह सचमुच सोने में सुहागा होता है। सम्बलक ने इसी दिशा में एक यह पावन प्रयास किया है।

मुख्य शब्दः

जगदीश चन्द्र आमेटा
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, (सी.टी.ई.),
उदयपुर

प्रस्तावना

शिक्षार्थी, शिक्षक और पाठ्यचर्या में एक स्वाभाविक, चिर और अभिन्न सम्बन्ध है। इन तीनों में से एक के भी अस्तित्व के अभाव की कल्पना हास्य की बात लगती है। शिक्षा जगत् में प्राचीन से लगाकर अर्वाचीन काल तक इनका महत्त्व अक्षय रहा है। हाँ, अद्यतन समय में शिक्षार्थी को 'केन्द्र' मान लिया गया है; किन्तु शिक्षक और पाठ्यचर्या को भी समान रूप से स्वीकार किया गया है। जहाँ तक हिन्दी पाठ्यचर्या और इसमें भी व्याकरण सम्प्रत्ययों की बात है, यह शिक्षक–शिक्षार्थियों हेतु सुखद चुनौती है। एतदर्थ सम्बलक ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय आयड़, उदयपुर की प्राचार्या, हिन्दी व्याख्याता और हिन्दी वरिष्ठ अध्यापिका से परिचर्चा करके उनके सुझावानुसार उच्च प्राथमिक स्तर और माध्यमिक स्तर पर पाठ्यचर्या आधृत हिन्दी व्याकरण पर सम्बलन देना तय किया। इससे न केवल स्थानीय हिन्दी शिक्षकों को सम्बल प्राप्त होगा, अपितु उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की बालिकाएँ भी प्रत्यक्षतः शैक्षिक लाभ प्राप्त कर सकेंगी।

समस्या कथन

उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पाठ्यचर्या आधारित हिन्दी व्याकरणिक स्थिति का पूर्व परीक्षण और तदनुसार सम्बलन शिक्षण।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का निम्नांकित उद्देश्य है –

स्थानीय विद्यालय के उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर (कक्षा – आठ और दस) की पाठ्यचर्या आधृत हिन्दी व्याकरणिक स्थिति के निदान हेतु पूर्व परीक्षण करना।

पूर्व परीक्षण के परिणामों के आधार पर पाठ्यचर्या आधृत हिन्दी व्याकरणिक दक्षता हेतु सम्बलन शिक्षण कराना।

सम्बलन हेतु कक्षा चयन

सम्बलक ने उपलब्ध संसाधनों और स्थानीय विद्यालय कुटुम्ब की अपेक्षानुसार कक्षा–आठ और दस के चयन का निश्चय किया।

सम्बलन परिसीमन

सम्बलक ने प्राप्य संसाधनों को ध्यान में रखते हुए इसे राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय आयड़, उदयपुर में कक्षा–आठ और दस के पाठ्यचर्या आधृत हिन्दी व्याकरणिक शिक्षण सम्बल तक परिसीमित किया है।

सम्बलन हेतु क्षेत्रों का चयन

यह सर्वज्ञात तथ्य है कि हिन्दी व्याकरणिक सम्प्रत्ययों के अवबोध से ही इसमें दक्षता सम्भव है। अतएव सम्बलक ने स्थानीय हिन्दी विषयाध्यापकों से परामर्शोंपरान्त निम्नांकित दस क्षेत्रों का चयन किया –

1. संज्ञा
2. सर्वनाम

3. विशेषण
4. वर्तनी
5. वाक्य–शुद्धता
6. विलोमार्थी
7. पर्यायवाची
8. समास
9. सन्धि
10. अन्य

शोध उपकरण

किसी भी परीक्षण में दत्त संकलन हेतु प्रयुक्त साधन को उपकरण कहते हैं। ये उपकरण दो प्रकार के होते हैं – मानकीकृत और स्वनिर्मित।

स्वनिर्मित उपकरण को विशेषज्ञों के परामर्श-अनुसार मानकीकृत किया जाता है।

प्रस्तुत परीक्षणों में कोई उपयुक्त मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं होने से विशेषज्ञों के परामर्श-अनुसार स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का अनुप्रयोग करने का निश्चय किया गया।

उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हिन्दी व्याकरणिक स्थिति का पूर्व परीक्षण, परीक्षण–परिणामों के आधार पर सम्बलन शिक्षण और पश्च परीक्षण निम्नांकित क्षेत्रों के आधार पर करना तय किया–

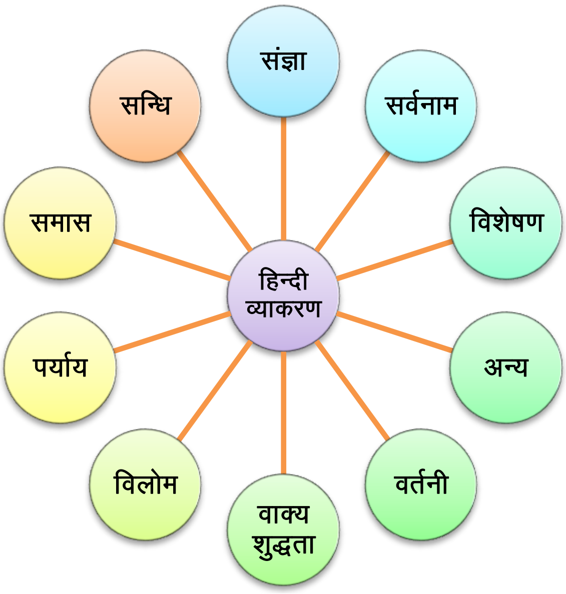

स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण में उक्त प्रत्येक आधार पर पाँच–पाँच प्रश्नों का निर्माण करते हुए प्रत्येक प्रश्न का अंक-भार दो अंक रखा गया। इस प्रकार कुल पचास प्रश्न निर्मित हुए, जिनका कुल पूर्णांक एक सौ अंक हो सके।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

इस समस्या-अध्ययन में दत्तों का विश्लेषण करने के लिए निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का चयन किया गया है–

1. मध्यमान।
2. मानक विचलन।
3. 't' परीक्षण।

समग्र विश्लेषण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सम्बलन में चयनित सभी दस क्षेत्रों में व्याकरणिक स्थिति निम्नवत् प्राप्त हुई–

क्र.स.	क्षेत्र	मध्यमान	
		पूर्व परीक्षण	पश्च परीक्षण
1.	संज्ञा	3.9	8.2
2.	सर्वनाम	3.6	8.1
3.	विशेषण	4.4	8.4
4.	पर्यायवाची	4.0	8.8
5.	विलोम	2.7	8.6
6.	वर्तनी	2.6	8.8
7.	सन्धि	2.3	8.9
8.	समास	1.7	9.1
9.	वाक्य-शुद्धता	3.3	8.7
10.	अन्य	3.6	9.0

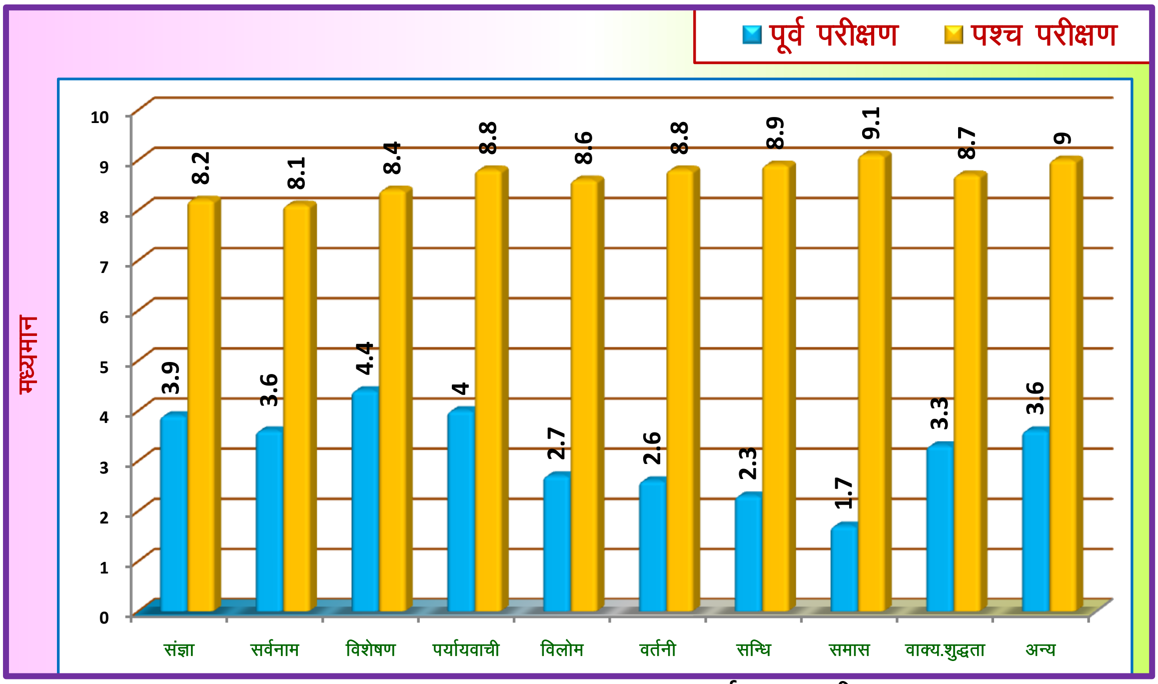

प्रस्तुत मध्यमान-तालिका से यह स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सम्बलन में चयनित सभी दस क्षेत्रों में 'पूर्व परीक्षण' की अपेक्षा 'पश्च परीक्षण' का मध्यमान उच्च है। अर्थात् सम्बलक का उपचारात्मक शिक्षण सफल रहा है।

प्रासंगिकता

विद्यार्थियों के समक्ष व्याकरणिक समस्याएँ सदैव चुनौती देती हुई प्रतीत होती है। विद्यार्थियों की सजगता, पाठ्य सामग्रियों की सहज उपलब्धता और अध्यापकों की कर्तव्य-निर्वहन के प्रति प्रतिबद्धता हिन्दी व्याकरणिक समस्याओं का पर्याप्त समाधान है। हाँ, इस पर कहीं से कोई सम्बल मिल जाता है तो यह सचमुच सोने में सुहागा होता है। सम्बलक ने इसी दिशा में एक यह पावन प्रयास किया है।

साहित्यावलोकन

पटेल, अल्पा एस. (2005) ईडर तहसील के माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिन्दी पाठ्यचर्या के प्रति अभिवृति एवं अधिगम कठिनाइयों का अध्ययन।

मीणा, काह्माराम (2013) एनसीएफ 2005 के सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर।

(प्रस्तुत कार्य शोधार्थी का मौलिक कार्य है। इस विषय पर अभी तक शोधार्थी की अधिकतम जानकारी के अनुसार कोई कार्य नहीं हुआ है।)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

1. *कुमार, डॉ. अरविन्द (2012), सम्पूर्ण हिन्दी व्याकरण और रचना, पटना। लूसेंट पब्लिकेशन।*
2. *जोशी, डॉ. ब्रजरतन (2010), हिन्दी व्याकरण सार, जयपुर। पत्रिका प्रकाशन।*
3. *ढौंढ़ियाल, सच्चिदानन्द एवं अरविन्द फाटक (पुनर्संस्करण, 2003), शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
4. *नागर, कैलाश नाथ (1993), सांख्यिकी के मूल तत्त्व, मेरठ। मीनाक्षी प्रकाशन।*
5. *'भावी', रतन लाल गोयल एवं डॉ. भगवती लाल व्यास (2003),नवीन हिन्दी व्याकरण एवं रचना, अजमेरअल्का पब्लिकेशंस।*
6. *मंगल, डॉ. अंशु एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2011), शैक्षिक अनुसन्धान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, आगरा।राधा प्रकाशन मंन्दिर प्रा. लि.।*
7. *शर्मा, महेश प्रसाद (2007), हिन्दी प्रभा व्याकरण एवं रचना, मथुरा। मीतल पब्लिशिंग हाऊस।*
8. *सक्सैना एन.आर. एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2003), अध्यापक शिक्षा, मेरठ।सूर्या पब्लिकेशन।*
9. *जगदीश चन्द्र आमेटा (2015), सम्बलक द्वारा स्व–संकलित व्याकरण कोष*

शब्दकोश

10. *बाहरी, डॉ. हरदेव (2011), राजपाल हिन्दी शब्दकोश, दिल्ली।*